

प्रायो निर्भुज्यते शार्ङ्गमायसं च *drückt sich bei Seite, entwirrt* 1, 99, 2. निर्भुज्ये नेत्रे *verdrehle Augen* 2, 402, 11. 17. श्मशाने — निर्भुज्यन्नग्निभूषिते *gebogen MBh.* 13, 6406.

— विनिम् *bei Seite biegen*: वामेनाति विनिर्भुज्य कृस्तेन *Suṣr.* 2, 353, 12.

— परि *umspannen, umfassen*: तयास्मान्विद्यतस्त्वर्मपदमया परि भुज् *VS.* 16, 11. यस्याङ्गं शर्वसा मानमूक्यं परिभुज्द्रोदसी विद्यतः सीम् *RV.* 1, 100, 14. परि यदिन्द्रो रोदसी उभे ध्रुवभोजीर्महिना विद्यतः सीम् 33, 9. तं षोडशभिर्मणैः पर्यभुजत् *PANĀV. Br.* 13, 3, 22. परिभुग् *P.* 8, 4, 31, *Sch.* *gebogen BHATT.* 10, 31.

— प्र *beugen*: दनिषां ज्ञान प्रभुज्य बुकेति *KAUṢ.* 1. Kāṭh. beim Schol. zu Kāṭh. *Çr.* 10, 7, 4. *PANĀV. Br.* 20, 2, 4. प्रभुग् *P.* 8, 4, 29, *Sch.*

— वि, partic. विभुग् *umgebogen VJUP.* 101.

— प्रवि *umbiegen*: शल्यवारङ्गम् *Suṣr.* 1, 101, 6.

— सम्, partic. संभुग् *zusammengebogen BHATT.* 4, 42.

2. भुज् (= 1. भुज्) *s. त्रि.*

3. भुज्, भुज्क्ति (भुज्जति *GRJASAMGH.* 2, 30. *Spr.* 4039. 4844) und भुज्जे (उपभुज्जे *MBh.* 3, 15118. भुज्जे 3. sg. 8085. *HARIV.* 1173 [die neuere Ausg. भुज्क्ति च *st. ch* भुज्जेते]. *M.* 3, 131, wo aber auch der pl. gemeint sein kann) *Dhātup.* 29, 17 (पालनाभ्यवहारयोः). 3 pl. भुज्जते und भुज्जते, *ved.* भोजते und भोजन्; भुज्जामहे, भुज्याम् (भुज्जीयाम् *MBh.* 3, 2599. भुज्जेत् 13, 5044. *Ind. St.* 3, 393, 4. उपभुज्जोतम् *MBh.* 3, 227); कुभोज und कुभुजे, कुभुज्जते, कुभुज्जते: भोदयति und भोदयते *Kāṣ.* 2 aus *Siddh. K.* zu *P.* 7, 2, 10: अभुज्, *ved.* भुजेम; भुज्क्ता, भोक्तुम्. भोजसे *RV.* 1, 83, 3. 8, 34, 3. *VĀLAKH.* 3, 3. 1) *geniessen, Etwas zu geniessen haben, sowohl zu Nutzen haben. mit Vortheil besitzen, als vom Genuss von Speisen; in der älteren Sprache mit dem instr.* *RV.* 1, 138, 3. शश्वद्धि वं उतिभिर्विभुज्महे 8, 56, 16. 7, 81, 5. यद्गुणोर्भिर्योर्नभिर्भुज्जता 6, 62, 6. भेयजेर्न *AV.* 6, 24, 3. येन ज्ञाना उभये भुज्जते विर्णः *RV.* 2, 24, 10. 10, 19, 6. ये भुज्जते अणोत्तो न उक्थैः 5, 42, 9. उर्व येना नु कं मानुषी भोजते विट् 1, 72, 8. न तेर्भुज्जते *man geniesst d. h. isst sie nicht AIT. Br.* 4, 22. उज्जा *TS.* 5, 2, 8, 7. 6, 7, 4, 1. *Shadv.* *Br.* 2, 1. *Çat. Br.* 2, 2, 2, 13. 3, 9, 3, 27. 9, 4, 2, 11. यदि यज्ञागारिर्भोदयमाणा भवति *ÇĀNKH. Çr.* 18, 24, 13. *TS.* 2, 3, 2, 7. *KAUSH.* *Up.* 4, 20. तेन भुजिषीय (*prec. aor.*) *das möchte ich geniessen ĀCY. GRJ.* 1, 23, 19. *PANĀV. Br.* 1, 1, 1. अनन्तरं सा भुज्जति (वै भुज्जाना die neuere Ausg.) पयसा वा घृतेन वा *HARIV.* 7876. घयाचितेन 7879. In der späteren Sprache und zwar schon in den *SŪTRA* mit dem acc. construiert und gewöhnlich med. *essen, verzehren, ohne Object seine Mahlzeit halten; med.* *P.* 1, 3, 66. न पत्तिमांसं भुज्जति *GOBH.* 3, 2, 41. *ÇĀNKH. GRJ.* 3, 1, 2, 6. *LĀTJ.* 8, 2, 9, 6, 30. *M.* 1, 101, 3, 116. 170, 238. 4, 62. 222. 11, 155. *BHĀG.* 2, 5. *HARIV.* 13961. *R.* 1, 13, 17. 18. 39, 11. 63, 5. 2, 24, 3. *Suṣr.* 1, 244 15. *KĀM. NITIS.* 14, 63. *Spr.* 180. 2443. भुज्जानाः पवनं सरीसृपगणाः 2033. 3036. 4131. *KATHĀS.* 28, 126. 43, 63. 43, 230. *MĀRK. P.* 114, 28. धान्यं कुभुजे विकृन्त्यः *RĀGĀ-TAR.* 1, 246. कथं सदसि भोक्तारो क्विस्तस्य सुरर्षयः *R.* 1, 39, 13. यस्य भुज्जति आद्रम् *M.* 3, 146. 222. 249. अथं स केवलं भुज्जे यः पत्त्यात्मकारणात् 118. न भिन्नभाण्डे भुज्जति 4, 65. शयनद्यो न भुज्जति 74. 3, 236. *MBh.* 1, 7623. *Spr.* 1103. 2663. *R.* 3, 33, 7. भोदयते धुरि चान्येषाम् so v. a. *du wirst bei der Tafel obenan sitzen KATHĀS.* 3, 113. 7, 48. 43, 221. 49, 15. *RĀGĀ-TAR.* 6, 262. *BHĀG. P.* 9, 21, 7. *MĀRK. P.* 26, 14. *PRAB.* 43, 10. मत्क्रुद्धानुराणां (sc. अन्नं)

च न भुज्जति *M.* 4, 207. भुज्जान 2, 195. 3, 115. 176. *Suṣr.* 1, 118, 6. *घ.* *R.* 1, 64, 20. भुज्क्ता *gegessen habend, nach der Mahlzeit M.* 2, 53. 98. 4, 129. *Spr.* 2032. *KATHĀS.* 44, 107. *PANĀV. Br.* 1, 2, 75. *घ.* *GOBH.* 4, 3, 20. *R.* 1, 65, 6. भोजं भोजं व्रजति = भुज्क्ता भुज्क्ता व्र *P.* 3, 4, 22, *Sch.* भोक्तुम् *M.* 7, 216. *Hip.* 3, 17. *BHĀG. P.* 9, 21, 5. act.: धेनुश्चान्द्राश्च भूयिष्ठं भुज्जः *fressen am meisten Çat. Br.* 3, 1, 2, 21. *PANĀV. Br.* 25, 1, 13. भुज्ज *MBh.* 1, 7132. भुज्जति *Spr.* 4844. भुज्जति 2833, v. 1. भुज्जीयाम् *MBh.* 3, 2599. कुभुज्जः 7, 2308. *HARIV.* 8438. समानमेकपात्रे तु भुज्जन्नात्रम् (so mit der ed. *Bomb.* zu lesen) *MBh.* 13, 5044. भुज्जता (partic.) *MĀRK. P.* 51, 33. pass.: सर्वः सर्वदा । अनेकयुद्धयिनः प्रतापादेव भुज्यते *wird verspeist so v. a. zu Nichte gemacht Spr.* 938. impers.: भुज्यतां भुज्यताम् *MBh.* 1, 7649. *R.* 1, 13, 13. कुभुज्जि *BHATT.* 14, 92. भुज्जं तेन *P.* 3, 4, 76. *Sch.* भुज्जं घोदनस्तेन *ebend. AK.* 3, 2, 60. *M.* 2, 55. 3, 144. 170. अज्ञातभुज्ज 3, 21. 11, 160. अर्धभुज्ज *MĀRK. P.* 22, 38. *geniessen in allgemeinerer Bed., in Verbindung mit einem Object, das keine Speise ist: भोगान्भुज्जे Spr.* 3736. 3010. *R. GORR.* 2, 33, 38. 3, 33, 3. 34, 18. *KATHĀS.* 39, 161. *MĀRK. P.* 61, 64. 110, 33. *Ver.* in *LA.* (II) 36, 1. भोगा न भुज्क्ता वयमेव भुज्क्ताः (*ausgebeutet*) *Spr.* 2070. भुज्जभोगा *adj.* *Ind. St.* 1, 428, N. कुभुजे विषयान् *BRĀHMA-P.* in *LA.* (II) 34, 22. *BHĀG. P.* 7, 3, 33. उपवृत्तान्वहन्कामांस्ते भुज्जति *MBh.* 1, 5006. भोक्तुं कनं वाञ्छितम् *Spr.* 2487. लक्ष्मीम् 4947. अर्थम्. मित्रवर्गम्. ऐश्वर्यं कुलान्वितम्. अयम् *MBh.* 13, 309. 3, 10618. *Spr.* 3010. *KATHĀS.* 32, 181. 38, 40. विरजोसि च वासोसि दिव्याश्चित्राः स्रजस्तथा । भूषणानि च मुद्रयानि देवान्प्राप्य नृभुज्ज वै ॥ *MBh.* 3, 2167. आयुष्यम्, यशस्यम्, अयम्, स्रजम् *M.* 2, 52. त्रैलोक्यविजयं पुत्र (so ist mit der ed. *Bomb.* zu lesen) सह भोदयमि *R.* 1, 46, 14. भोक्तुं त्रयम् कुन्दम् *ÇĀK.* 113, v. 1. *MEGH.* 19. प्रीतिम् *R.* 1, 70, 4. सुखानि *KATHĀS.* 43, 374. तृष्णाविनयनम् *MBh.* 13, 15. व्यसनम् 2, 2608. शानयोनिशतम् *VĀDDHA-KĀṢ.* 13, 20. राज्यं समृद्धम् *BHĀG.* 11, 33. *R.* 1, 31, 4. 2, 61, 15. 66, 3. 82, 6. *R. GORR.* 2, 8, 28. *PANĀV.* 202, 20. तस्य राज्यं न्यासमिवाभुनक् so v. a. *besass die Herrschaft, benutzte sie aber nicht RAGH.* 12, 18. आधिम् benutzen *M.* 8, 144. 150. *JĀGĒ.* 2, 90. धेनुम्, उष्ट्रम् u. s. w. *M.* 8, 146. *fg.* 168. लेत्रम् *Spr.* 1846. (भूमेः) परेण भुज्जमानायाः *JĀGĒ.* 2, 24. ग्रामसंचयम् so v. a. *die Einkünfte von ihnen erhebend Vid.* 60. *M.* 7, 119. *RĀGĀ-TAR.* 3, 356 (act.). एवं राष्ट्रमुपायेन भुज्जानो लभते फलम् *Spr.* 4917. *DHĀRTAS.* in *LA.* 96, 4. पृथिवीम्, महीम्, मेदिनीम् u. s. w. *die Erde geniessen so v. a. den Nutzen von ihr haben, sie beherrschen (von Fürsten gesagt); med.* *M.* 7, 118. *BHĀG.* 2, 37. *MBh.* 4, 206. 3, 358. *KĀM. NITIS.* 1, 58. *Spr.* 2243. 2829. *RAGH.* 3, 4, 8, 7. 13, 1. *MĀRK. P.* 133, 4. act. *M.* 9, 67. *RAGH.* 18, 3. *ÇĀK.* 48. *BHĀG. P.* 1, 17, 27. *MĀRK. P.* 114, 17. *RĀGĀ-TAR.* 1, 196. भुज्जं भुज्जा 1, 273. 311. भुज्जता राजभिर्वसुंधरा *RAGH.* 4, 7. *Spr.* 193. कालकन्यायि कुभुजे पुरंजयपुरे वलात् *setzte sich in den Besitz BHĀG. P.* 4, 28, 3. *Jmd* *geniessen so v. a. sich zu Nutzen machen, ausbeuten: देवीं संप्रति भुज्जम्हे KATHĀS.* 32, 140. 34, 206. 43, 65. *BHĀG. P.* 1, 16, 21. भोगा न भुज्क्ता वयमेव भुज्क्ताः *Spr.* 2070. *Jmd* *geschlechtlich geniessen: सुत्रयं वा वित्रयं वा पुमानित्येव भुज्जते (स्त्रियः) 1561. 1647. व्यञ्जनेस्तु समुपवृत्तेः सोमो भुज्जति (भुज्जे हि Spr.* 2907) कन्यकाम् *GRJASAMGH.* 2, 30. स्त्रियः पूर्वं सूरिभुक्ताः सोमगन्धर्ववह्निभिः । भुज्जते मानुषाः पश्यात् *Spr.* 3301. 3010. *MBh.* 1, 3901. 7268. हृदयी प्रसभं भुज्जता *HARIV.* 9964. *BHATT.* 6, 136. किं तथा क्रियते लक्ष्म्या या वधूरिव केवला । या न वेष्टेय सामान्या